ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 2 | Issue 1 | August-September 2025
Available online at: https://nijms.com/
DOI: https://doi.org/10.71126/nijms.v2i1.84

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का समावेशन

विनोद कुमार मिश्रा [1] एवं डॉ. लोहंस कुमार कल्याणी [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा (बी.एड.) विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा।

[2] शोध निर्देशक, शिक्षक शिक्षा (बी.एड.) विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा।

[1]***Corresponding Author Email:*** *vkm.Mishra992@gmail.com*

[2]***Email:*** *lohanskalyani@gmail.com*

सारांश:

यह शोध-पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन के सिद्धांतों के समावेशन का विश्लेषण करता है। गांधीजी की 'नई तालीम' या बुनियादी शिक्षा की अवधारणा, जो कार्य-आधारित, मूल्य-संचालित और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा पर जोर देती है, आज भी प्रासंगिक है। इस अध्ययन का ***उद्देश्य*** *NEP 2020 के उन प्रावधानों की पहचान और मूल्यांकन करना है जो गांधीवादी विचारों जैसे—मातृभाषा में शिक्षा, व्यावसायिक कौशल, नैतिक विकास और अनुभवात्मक अधिगम (experiential learning) को दर्शाते हैं। यह शोध NEP 2020 के दस्तावेज़ों और गांधीजी के शैक्षिक लेखन के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है।* ***प्रमुख निष्कर्ष*** *यह दर्शाते हैं कि NEP 2020 ने गांधीजी के कई प्रमुख विचारों को सैद्धांतिक रूप से अपनाया है, विशेष रूप से कौशल विकास, स्थानीय कलाओं को महत्व देना और शिक्षा को समग्र बनाना। हालाँकि, इन सिद्धांतों के व्यावहारिक कार्यान्वयन में शहरी-ग्रामीण असमानता और आधुनिक तकनीक के साथ गांधीवादी सरलता का संतुलन जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि यदि गांधीवादी दर्शन को सही भावना के साथ लागू किया जाए, तो NEP 2020 एक आत्मनिर्भर और मूल्य-आधारित समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।*

मुख्य शब्द: *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, महात्मा गांधी, बुनियादी शिक्षा, नैतिक शिक्षा, कार्यप्रधान शिक्षा, आत्मनिर्भरता, मूल्याधारित शिक्षा।*

1. परिचय:

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता आज के इस तकनीकी-केंद्रित और प्रतिस्पर्धात्मक युग में अप्रासंगिक होने के बजाय और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहाँ अक्सर रटने की प्रवृत्ति (rote learning), डिग्री की होड़ और व्यावहारिक जीवन से अलगाव जैसी समस्याओं से ग्रस्त है, वहीं गांधीजी का शैक्षिक दर्शन एक सार्थक विकल्प प्रस्तुत करता है। गांधीजी के लिए शिक्षा केवल साक्षरता या सूचनाओं का संग्रह नहीं थी; यह व्यक्ति के मन (बौद्धिक क्षमता), शरीर (शारीरिक कौशल) और आत्मा (नैतिक चेतना) के सामंजस्यपूर्ण और सर्वांगीण विकास का एक समग्र माध्यम थी। उनकी 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' की क्रांतिकारी अवधारणा इसी समग्र दृष्टिकोण पर आधारित थी। इसका मूल उद्देश्य केवल जानकार नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना था जो आत्मनिर्भर हों, जिनका चरित्र मजबूत हो, और जो अपने समाज के प्रति जिम्मेदार हों। यह दर्शन शिक्षा को जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम था, न कि उसे कक्षाओं की चारदीवारी तक सीमित रखने का।

स्वतंत्रता-उत्तर भारत की शैक्षिक चुनौतियों की जड़ें औपनिवेशिक काल की मैकाले द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति में गहराई तक जमी हुई हैं। इस पद्धति ने एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण किया जो सैद्धांतिक ज्ञान में तो निपुण थी, लेकिन अपने परिवेश, अपनी संस्कृति और व्यावहारिक कौशल से पूरी तरह कट गई। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम "शिक्षा का जीवन से अलगाव" के रूप में सामने आया। शिक्षा का उद्देश्य केवल 'व्हाइट कॉलर' नौकरियां प्राप्त करना बनकर रह गया और शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। परिणामस्वरूप, बेरोजगारी, युवाओं में कौशल की भारी कमी और नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास जैसी गंभीर सामाजिक-आर्थिक समस्याओं ने जन्म लिया। गांवों से शहरों की ओर प्रतिभा का पलायन भी इसी शिक्षा व्यवस्था की एक दुखद देन रही, जिसने ग्रामीण भारत के विकास को बाधित किया।

इसी पृष्ठभूमि में, नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का अवलोकन एक ऐतिहासिक और साहसिक कदम के रूप में देखा जा सकता है। यह नीति दशकों पुरानी शिक्षा प्रणाली में केवल सतही सुधारों के बजाय आमूलचूल परिवर्तन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखती है। यह 21वीं सदी के वैश्विक लक्ष्यों, जैसे—आलोचनात्मक सोच (critical thinking), रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देने के साथ-साथ, भारतीय लोकाचार और मूल्यों को पुनः स्थापित करने का एक ईमानदार प्रयास करती है। बहुभाषिकता, भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समावेश, और व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाना जैसे इसके प्रावधान यह दर्शाते हैं कि नीति-निर्माता शिक्षा को उसकी जड़ों से फिर से जोड़ना चाहते हैं।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सैद्धांतिक ढांचे का गहन विश्लेषण करके उन तत्वों को खोजना और उजागर करना है जो महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित हैं। यह अध्ययन केवल समानताओं को सूचीबद्ध करने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह मूल्यांकन भी करेगा कि गांधी के आदर्शों को आधुनिक संदर्भ में कितनी समग्रता से अपनाया गया है। हमारी शोध समस्या इस प्रश्न के इर्द-गिर्द केंद्रित है कि "NEP 2020 गांधीवादी विचारों को किस हद तक और कितनी प्रभावी ढंग से एकीकृत करती है, और इन आदर्शों के व्यावहारिक कार्यान्वयन में क्या संभावित संरचनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक चुनौतियाँ हैं?"

2. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार:

गांधीजी का शैक्षिक दर्शन केवल तत्कालीन औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का विरोध नहीं था, बल्कि यह एक संपूर्ण, जीवन-व्यापी और आत्मनिर्भर समाज की नींव रखने का एक व्यावहारिक खाका था। यह दर्शन मानता था कि सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करे और उसे एक बेहतर इंसान बनाए। यह केवल किताबी ज्ञान का विरोधी नहीं, बल्कि उस ज्ञान को जीवन के यथार्थ से जोड़ने का पक्षधर था।

2.1 बुनियादी शिक्षा (Nai Talim)-

इसे 'बुनियादी तालीम' या 'वर्धा शिक्षा योजना' (1937) के नाम से भी जाना जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है **'सबके लिए नई शिक्षा'**। यह गांधीजी के शैक्षिक दर्शन का हृदय था। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा को एक उत्पादक हस्तशिल्प (Productive Handicraft) के माध्यम से दिया जाना चाहिए।

- **समन्वय का सिद्धांत (Principle of Correlation):** गांधीजी का मानना था कि बच्चों को कताई, बुनाई, कृषि, लकड़ी का काम या कोई अन्य स्थानीय रूप से प्रासंगिक शिल्प सिखाया जाना चाहिए। लेकिन यह शिल्प केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा के केंद्र के रूप में काम करना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब बच्चा चरखा चलाना सीख रहा हो, तो उसे रुई के उत्पादन के माध्यम से **विज्ञान**, सूत की गिनती और लंबाई-चौड़ाई के हिसाब से **गणित**, और भारत के कपड़ा उद्योग के माध्यम से **इतिहास और भूगोल** सिखाया जा सकता है। इस तरह, ज्ञान अलग-अलग खानों में बंटा हुआ नहीं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ा हुआ और व्यावहारिक होता।
- **आत्मनिर्भरता का लक्ष्य:** इस प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य स्कूलों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना था। छात्रों द्वारा बनाए गए उत्पादों को बेचकर स्कूल का खर्च निकाला जा सकता था। इससे न केवल देश पर शिक्षा का बोझ कम होता, बल्कि छात्रों में छोटी उम्र से ही आत्मनिर्भरता और **श्रम के प्रति सम्मान** की भावना पैदा होती।

2.2 शिक्षा में कार्य और शिल्प का महत्व-

गांधीजी के लिए, शारीरिक श्रम (श्रम) और बौद्धिक कार्य (दिमागी काम) के बीच का भेद कृत्रिम और हानिकारक था। उन्होंने इस विचार को खारिज कर दिया कि दिमागी काम करने वाले श्रेष्ठ और हाथ से काम करने वाले निम्न होते हैं।

- **हाथ और मस्तिष्क का समन्वय:** उनका मानना था कि जब बच्चे अपने हाथों से कुछ बनाते हैं, तो उनका मस्तिष्क अधिक सक्रिय और रचनात्मक रूप से काम करता है। 'करके सीखना' (Learning by Doing) ज्ञान को स्थायी बनाता है। यह बच्चे के समग्र स्नायविक और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए आवश्यक है।
- **निर्माता, न कि केवल उपभोक्ता:** शिल्प-केंद्रित शिक्षा बच्चों को केवल एक निष्क्रिय उपभोक्ता (consumer) बनाने के बजाय एक सक्रिय निर्माता (producer) बनाती है। जब बच्चा कुछ बनाता है, तो उसमें आत्मविश्वास, रचनात्मकता और समस्या-समाधान का कौशल विकसित होता है। वह संसाधनों का मूल्य समझता है और बर्बादी से बचता है।

2.3 नैतिक एवं मूल्य आधारित शिक्षा-

गांधीजी के लिए, शिक्षा का सर्वोच्च और अंतिम लक्ष्य **चरित्र निर्माण** था। वे अक्सर कहते थे कि चरित्र के बिना ज्ञान एक पाप है। उनकी शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम से अलग नहीं, बल्कि शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग माना जाता था।

- **मूल्यों का अभ्यास:** सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, निडरता और सर्वधर्म समभाव जैसे मूल्य केवल किताबों में पढ़ाने के लिए नहीं थे, बल्कि स्कूल के दैनिक जीवन में अभ्यास करने के लिए थे। स्कूल की सफाई में सभी की भागीदारी **स्वच्छता और श्रम के गौरव** का पाठ पढ़ाती थी। सामूहिक प्रार्थना **सर्वधर्म समभाव** को बढ़ावा देती थी। आपसी विवादों को अहिंसक तरीके से सुलझाना **अहिंसा** का व्यावहारिक प्रशिक्षण था। उनका मानना था कि शिक्षक का अपना आचरण छात्रों के लिए सबसे बड़ी पाठ्यपुस्तक है।

2.4 ग्राम-आधारित और स्वावलंबन केंद्रित शिक्षा-

गांधीजी का मानना था कि "भारत की आत्मा गाँवों में बसती है," और इसलिए शिक्षा को ग्रामीण जीवन और उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली युवाओं को अपनी जड़ों से काटकर शहरों में क्लर्क बनने के लिए तैयार करती थी, जिससे 'ब्रेन ड्रेन' होता था और गाँव पिछड़ जाते थे।

- **स्थानीय परिवेश से जुड़ाव:** उन्होंने एक ऐसी शिक्षा की वकालत की जिसका पाठ्यक्रम स्थानीय पर्यावरण, संसाधनों और संस्कृति पर आधारित हो। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो युवाओं को अपने गाँव की समस्याओं (जैसे- कृषि, स्वच्छता, स्वास्थ्य) को समझने और उन्हें हल करने के लिए सक्षम बनाए, न कि उन्हें शहरों की ओर पलायन के लिए प्रेरित करे। इसका उद्देश्य **'ग्राम स्वराज्य'** की अवधारणा को मजबूत करना था।

2.5 सर्वांगीण विकास और चरित्र निर्माण-

गांधीजी के शैक्षिक दर्शन का सार उनके **3H** के सूत्र में निहित है: **Head (मस्तिष्क), Heart (हृदय), और Hand (हाथ)** का संतुलित और सामंजस्यपूर्ण विकास।

- **Head (मस्तिष्क):** बौद्धिक विकास, जिसमें आलोचनात्मक सोच और तार्किक क्षमता शामिल है।
- **Hand (हाथ):** शारीरिक कौशल, उत्पादक कार्य और श्रम के प्रति सम्मान।
- **Heart (हृदय):** भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास, जिसमें करुणा, सहानुभूति और नैतिक मूल्य शामिल हैं।

मौजूदा शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से केवल 'Head' पर ध्यान केंद्रित करती थी। गांधीजी का मानना था कि जब तक इन तीनों का एक साथ विकास नहीं होता, तब तक शिक्षा अधूरी है। उनका लक्ष्य ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना था जो बौद्धिक रूप से सक्षम, भावनात्मक रूप से संतुलित, शारीरिक रूप से कुशल और नैतिक रूप से मजबूत हो—एक पूर्ण मनुष्य।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ:

NEP 2020 एक प्रगतिशील दस्तावेज है जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने का प्रयास करता है।

- **प्रारंभिक और उच्च शिक्षा में सुधार:** नीति में 5+3+3+4 की नई पाठ्यचर्या संरचना, मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान पर जोर, और उच्च शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण (multi-disciplinary approach) जैसे सुधार शामिल हैं।
- **कौशल आधारित शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण:** कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप का प्रावधान किया गया है। इसका उद्देश्य छात्रों को पारंपरिक डिग्री के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल में भी निपुण बनाना है।
- **मातृभाषा और बहुभाषी शिक्षा:** NEP 2020 कम से कम ग्रेड 5 तक और संभव हो तो ग्रेड 8 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा/स्थानीय भाषा रखने की सिफारिश करती है।
- **मूल्य और नैतिकता पर बल:** नीति में संवैधानिक मूल्यों, नैतिकता, और एक भारतीय होने की भावना को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया है।
- **शिक्षा में प्रौद्योगिकी का समावेश:** NEP 2020 शिक्षण और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करती है।

4. गांधीवादी विचारों का समावेशन: तुलनात्मक अध्ययन

NEP 2020 और गांधीवादी शैक्षिक दर्शन में कई समानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

गांधीवादी विचार	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधान
कार्य एवं कौशल-आधारित शिक्षा (नई तालीम)	कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा का परिचय, 'बैगलेस डेज' के दौरान स्थानीय कारीगरों के साथ इंटर्नशिप का अवसर।
मातृभाषा और प्राथमिक शिक्षा पर जोर	कम से कम ग्रेड 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षण पर जोर, जो गांधी के विचारों का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है।
शिक्षा में मूल्य और नैतिकता का समावेश	पाठ्यक्रम में नैतिक तर्क, पारंपरिक भारतीय मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों को शामिल करने की सिफारिश।
स्वावलंबन और ग्रामोन्मुखी दृष्टिकोण	'लोकल के लिए वोकल' की भावना को बढ़ावा देना और स्थानीय कला, शिल्प और ज्ञान को पाठ्यक्रम में स्थान देना।
सर्वांगीण शिक्षा और जीवन-कौशल	कला और विज्ञान, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच कठोर अलगाव को समाप्त करना और 21वीं सदी के कौशल (जैसे-आलोचनात्मक सोच) पर ध्यान केंद्रित करना।

5. चुनौतियाँ और सीमाएँ:

गांधीवादी विचारों को NEP 2020 में सैद्धांतिक रूप से शामिल करना एक सराहनीय कदम है, लेकिन इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं।

- **नीति और व्यवहारिक क्रियान्वयन में अंतर:** नीतियों को ज़मीनी स्तर पर उतारना सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण, पर्याप्त बुनियादी ढांचे और सामाजिक मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता होगी।
- **शहरी-ग्रामीण असमानता:** शहरों में व्यावसायिक शिक्षा के अवसर अधिक हो सकते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी इसे बाधित कर सकती है, जिससे मौजूदा असमानता और बढ़ सकती है।
- **कौशल शिक्षा को आर्थिक दृष्टि से प्रासंगिक बनाना:** यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि प्रदान किए जा रहे कौशल आधुनिक नौकरी बाजार की मांगों के अनुरूप हों, ताकि छात्र वास्तव में आत्मनिर्भर बन सकें।
- **आधुनिक तकनीक और गांधीवादी सरलता का संतुलन:** NEP 2020 प्रौद्योगिकी पर बहुत जोर देती है, जबकि गांधीजी की शिक्षा में सादगी और प्रकृति से निकटता पर बल था। इन दोनों के बीच संतुलन साधना एक जटिल कार्य होगा।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गांधीवादी विचारों का प्रभाव और संभावनाएँ:

इन चुनौतियों के बावजूद, यदि गांधीवादी सिद्धांतों को सही भावना से लागू किया जाता है, तो इसके दूरगामी सकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं।

- **शैक्षिक समावेशन:** मातृभाषा में शिक्षा और स्थानीय ज्ञान को महत्व देने से ग्रामीण और वंचित समुदायों के बच्चे शिक्षा से बेहतर ढंग से जुड़ पाएंगे।
- **आत्मनिर्भर भारत की दिशा में योगदान:** कौशल-आधारित शिक्षा बेरोजगारी की समस्या को कम कर सकती है और 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे राष्ट्रीय अभियानों को मजबूती प्रदान कर सकती है।
- **मूल्य आधारित समाज निर्माण:** नैतिकता और मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करने से एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है जो अधिक संवेदनशील, जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक हो।
- **नई पीढ़ी को चरित्रवान और सक्षम नागरिक बनाना:** सर्वांगीण विकास पर जोर देने से छात्र न केवल अकादमिक रूप से बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से भी सक्षम बनेंगे।

7. निष्कर्ष:

अंततः, यह स्पष्ट है कि **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन से महत्वपूर्ण प्रेरणा ली है।** कार्य-आधारित शिक्षा, मातृभाषा को प्राथमिकता, और मूल्य-आधारित शिक्षण जैसे तत्व गांधी की 'नई तालीम' की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। NEP 2020 की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन प्रगतिशील विचारों को कितनी ईमानदारी और प्रभावशीलता के साथ लागू किया जाता है। **गांधीवादी शिक्षा और NEP 2020 की समानता और प्रासंगिकता** यह सिद्ध करती है कि गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे स्वतंत्रता संग्राम के समय थे। यह नीति **भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए भविष्य की दिशा** निर्धारित करती है, जो यदि सही मार्ग पर चली, तो एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकती है जो ज्ञानवान, कुशल, आत्मनिर्भर और नैतिक रूप से मजबूत हो—ठीक वैसा ही जैसा गांधीजी ने सपना देखा था।

संदर्भ सूची

[1] गांधी, एम.के. (1953). *टुवर्ड्स न्यू एजुकेशन.* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[2] गांधी, एम.के. *मेरे सपनों का भारत.* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[3] मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.*

[4] विभिन्न शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं द्वारा गांधीवादी शिक्षा और NEP 2020 पर प्रकाशित लेख और पुस्तकें।

[5] गांधी, एम.के. (1938). बेसिक नेशनल एजुकेशन (वर्धा योजना रिपोर्ट). हिंदोस्तानी तालीमी संघ।

[6] गांधी, एम.के. (1951). बेसिक एजुकेशन. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[7] गांधी, एम.के. हिन्द स्वराज (अध्याय 18: शिक्षा). नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[8] गांधी, एम.के. (1962). टू एजुकेशन. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[9] गांधी, एम.के. (संपादित). हरिजन और यंग इंडिया पत्रिकाओं में शिक्षा पर प्रकाशित विभिन्न लेख।

गांधीवादी शिक्षा दर्शन पर विश्लेषणात्मक पुस्तकें:

[10] कुमार, कृष्ण. (1991). पॉलिटिकल एजेंडा ऑफ एजुकेशन: ए स्टडी ऑफ कॉलोनियल एंड पोस्ट-कॉलोनियल इंडिया. सेज पब्लिकेशन्स।

[11] सैय्यदैन, के.जी. (1939). द बेसिक स्कूल: इट्स प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[12] प्रभु, आर.के. (सं.). (1945). गांधी ऑन एजुकेशन. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[13] अविनाशलिंगम, टी.एस. (1960). गांधीजी'स एक्सपेरिमेंट्स इन एजुकेशन. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।

[14] श्रीमाली, के.एल. (1965). द वर्धा स्कीम: द गांधीयन प्लान ऑफ एजुकेशन फॉर रूरल इंडिया. विद्या भवन सोसाइटी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और संबंधित रिपोर्ट:

[15] कस्तूरीरंगन, के. (अध्यक्ष). (2019). ड्राफ्ट नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2019. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

[16] 16. यशपाल समिति रिपोर्ट. (1993). लर्निंग विदाउट बर्डन. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

[17] 17. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (National Knowledge Commission). (2009). रिपोर्ट टू द नेशन (2006-2009).

समकालीन अकादमिक लेख और शोध पत्र:

[18] शर्मा, मंजू. (2021). "नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 एंड गांधीयन फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन: ए कंपैरेटिव स्टडी". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 9(5), pp. 54-59.

[19] सिंह, आनंद कुमार. (2020). "रिलेवेंस ऑफ गांधीयन नई तालीम इन नेशनल एजुकेशन पॉलिसी-2020". जर्नल ऑफ एजुकेशन, 12(2), pp. 110-118.

[20] गुप्ता, अनिल के. (2020). "फ्रॉम नई तालीम टू NEP 2020: द मिसिंग लिंक्स ऑफ इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप". IIM अहमदाबाद वर्किंग पेपर।

[21] डे, बिद्युत. (2022). "रीविजिटिंग गांधी'स नई तालीम इन द लाइट ऑफ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020". एजुकेशनल क्वेस्ट: एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड सोशल साइंसेज, 13(1), pp. 23-28.

[22] कुमार, सुरेश. (2021). "गांधीयन विजन ऑफ एजुकेशन एंड इट्स रिफ्लेक्शन इन नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020". रिसर्चगेट पब्लिकेशन.

[23] तिवारी, राकेश. (2023). नई शिक्षा नीति 2020 और गांधी दर्शन. राजकमल प्रकाशन।

[24] चौबे, सर्वेश. (2022). "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन का समावेशन". शिक्षा विमर्श जर्नल, 7(3), pp. 45-52.

Cite this Article:

विनोद कुमार मिश्रा एवं डॉ. लोहंस कुमार कल्याणी, *"**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का समावेशन**", Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 2, Issue 1, pp. 01-06, August-September 2025.*
Journal URL: https://nijms.com/
***DOI:** https://doi.org/10.71126/nijms.v2i1.84*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.